 ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v5.i11.2017.2356

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Arts

भानपुरा क्षेत्र के प्रमुख शैलचित्र स्थल तथा यहाँ की कलात्मक धरोहर

Divya Singh [*1]
[*1] Research Scholar, Drawing and Painting Department, Faculty of Arts, D.E.I. Dayalbagh Agra, India

सारांश :– शैलचित्रों से तात्पर्य है शैलाश्रयों, गुफाओं, नदी नालों की दीवारों, छतों तथा खुली चट्टानों परपुरा मानव द्वारा किये गये चित्रण को शैल चित्र कहते हैं। शैलचित्र वह कला है जिसमें मानव के अभ्युदय होने के प्रमाण मिलते है जो उस समय के मानव के कलात्मक विकास और तीव्र इच्द्धा शक्ति की सोच को दर्शाता है।
शैलचित्रों के अतिरिक्त मानव इतिहास के विभिन्न कालखण्डों में गीत, संगीत, नृत्य व अन्य विधाओं को भी मानव ने अपनी कलात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया होगा, परन्तु शैलचित्रों के अतिरिक्त अन्य माध्यम में की गयी अभिव्यक्ति काल के थपेड़ों में सुरक्षित नहीं रह सकीं। अतः शैलचित्र मानव की सर्वाधिक प्राचीन उपलब्ध कलाकृतियाँ हैं।

मुख्य शब्द – भानपुरा, शैलचित्रए, कलाकृतियाँ

Cite This Article: Divya Singh. (2017). "भानपुरा क्षेत्र के प्रमुख शैलचित्र स्थल तथा यहाँ की कलात्मक धरोहर." *International Journal of Research - Granthaalayah,* 5(11), 295-306.

प्रस्तावना

शैलचित्र मानव मस्तिष्क की सोच का बाह्य रूप है जिन्हें मानव ने चट्टानों की प्राकृतिक सतह पर सृजित करने का प्रयास किया है। शैलचित्रों का निर्माण लाखों वर्ष पूर्व से लेकर ऐतिहासिक काल तक निरन्तर चलती रहा है। कहीं–कहीं तो यह परम्परा वर्तमान काल में किसी ना किसी रूप में जीवित है। शैलचित्र मानव के सृजनशील विचारों की रचना है। जिसमें मानव ने सत्य की अनुभूति को शैलचित्रों के रूप में अभिव्यक्त किया है। इन शैलचित्रों के माध्यम से दर्शित होता है कि पुरामानव जन्म से लेकर मृत्यू तक अपने संघर्षमय जीवन को आनन्द पूर्वक जीने का प्रयास किया है।

शैलचित्र स्थल

भारत में शैलचित्र काफी विस्तृत क्षेत्र में फैला हुआ है। ये पूर्व से पश्चिम तक व उत्तर से दक्षिण तक आग्नेय(Ignious), अवसादी(Sedimentary) व रूपान्तरित (Metamorphosed) चट्टानी क्षेत्रों में खुली चट्टानों पर नदी नालों घाटियों एवं गुफाओं में पाये जाते हैं। गुफाओं व शैलाश्रयों में सामान्यतः शैलचित्र खुले स्थानों की अपेक्षा सुरक्षित रूप में प्राप्त होते हैं। जबकि खुली चट्टानों पर बने शैलचित्र जलवायु के प्रभाव से अधिक क्षतिग्रस्त हो जाते हैं । भारत में लगभग 10,000 से भी अधिक शैलचित्र परिसरों की खोज की चुकी है। एक–एक शैलचित्र परिसरों में सैकड़ों शैलाश्रय मिलते हैं।

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.1098393

भारत में प्रमुख शैलचित्र स्थल

Major rock art regions in India

(i) *हिमालय* **: जम्मू–कश्मीर: लद्दाख :**झांसकर–कारगिल, **उत्तराखण्ड: कुमॉओ,** अलमोड़ा

उत्तर पूर्वी भारत: अरूणाचल प्रदेश , असम, मनिपुर, मिज़ोरम

***(ii)** मध्य भारत : विन्ध्या–चम्बल घाटी/बेसिन*

भानपुरा क्षेत्र, मण्डसौर जिला, मध्यप्रदेश: गाँधी सागर (GNDH), चिब्बड़नाला (CHIB), मोडी (MODI), दरकी–चट्टान, चतुर्भुज नाथनाला (CBN), चँवरियादेह (CNW), खिलचीपुर (KLP), Maleseri (MLS), गोलम्बानाला (GLB), रेवाल्की (RWL), खानवाला (KNW), अन्तरलिया (ANT) बबुलदा (BBL), द.प. चिब्बड़नाला (CHIB), Kathiriakund (KTR), Sitakhardi (SITA), Bijolia falls (BIJ), इन्द्रगढ़ (INDR), बिल्लीखों (BLK), Zhintakho (ZNT), बड़ा रामकुण्ड (BRK), छोटा रामकुण्ड (CRK), गेबसाहेब (GEB) इनमें दरकी–चट्टान के शैलचित्रों का गहन अध्ययन किया जा रहा है।

कोटा, राजस्थान, बरन, राजस्थान, मोरेना, ग्वालियर, शिवपुरी

राजस्थान में अरावली और विन्ध्याचल पठार, बूंदी

राजस्थान में अरावली, थार मरुस्थल अजमेर, जयपुर, नागौरसिरोही

गुजरात का तटीय क्षेत्र, *भवनगर*

(iii) सतपुरा पहाड़ी *पचमड़ी, म.प.*

(iv) विन्ध्याचल, मध्यप्रदेश , रायसन: भीमबेटका एवं समीप स्थल पहड़ियाँ लाखाजुआर, जावरा, भोपालः कथोटिया, सिहोरेः बुदनी, होशंगाबादः आदमगढ़, बेतुल, धारः खपर खेड़ा,, राजगढः नरसिंहगढ़, कोटरा, ,सागर रेवा–बान्ध, पन्ना, सतना, जबलपुर, कतनी

उत्तरीय विन्ध्याचल, उत्तर प्रदेश

मिर्जापुरः कौवा खोह, सुवा खोह, मुखाधरी, लखमा, हथवानी, द.पू. बिहार में उ. विन्ध्यास, कैमूर, द.पू. बिहार में और उ. झारखण्ड में कैमूर रनेज, द. बिहार, झारखण्ड

(v) ***पूर्वी घाट*** *उड़ीसा, भुवनेश्वरः रानीगुम्फा, सम्बलपुरः लेखामाड़, सुन्दरगढ़ः लेखामोड़ा*

(vi) ***भारतीय प्रायद्वीप:*** *मध्य प्रायद्वीपः महाराष्ट, पुणे, आन्ध्रप्रदेश, तमिलनाडु,*

मध्य एवं पश्चिमी प्रायद्वीप, कर्नाटक का पूर्वी दक्षिणी हिस्सा, कर्नाटक का मध्यपश्चिमी हिस्सा, शिवमोगाःबिल्लमर्याना गुड्डा, चिकरामपुर, कुतकनकरी, बादामी, हासपेटः हम्पी, गुलबर्गा, केरल, एडेक्कल गुफा

(vii) ***पश्चिमी घाटः गोवा*** *द. गोवा, द. महाराष्ट्र*

इस प्रकार शैल चित्र पूरे विश्व में पाये जाते हैं। जिसमें से मैंने भानपुरा क्षेत्र के प्रमुख शैलचित्र स्थलों को अपने शोध अध्ययन के लिये लिया है। जिसमें मुख्यरूप से हैंः गाँधी सागर (GNDH), चिब्बड़नाला (CHIB), मोडी (MODI)

चम्बलघाटी गाँधीसागर के शैलचित्र क्षेत्र स्थल :

शैलाश्रयः 1

आकारः लम्बाई–27.45m, गहराई–5.50m ऊँचाई–5.50m

Facing: दक्षिण–पश्चिम (SW)

कुल चित्रः गाँधीसागर के इस शैलाश्रय में 200 से अधिक चित्र बने हैं। किन्तु इस शैलाश्रय की एक ही सतह को अनेक बार प्रयोग किये जाने तथा समय के साथ धुंधले होने के कारण चित्रों को पहचानना बहुत मुश्किल है। इनमें से कुछ चित्र ही हैं जो स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। जिनमें 18 पशु आकृति(1हाथी, 1हिरन, 1गाय), 10 मानवाकृति

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.1098393

आकृति, 2 डिज़ाइन, 2 क्रियाकलाप आदि चित्रित है। जिनके आधार पर मैंने इस शैलाश्रय के चित्रों का प्रलेखन किया है।

गाँधीसागर में दो शैलाश्रय चित्रित मिलते हैं यह मालवा के पठार पर स्थित है जिसके सामने से पुराण प्रसिद्ध चर्मणावती या चम्बल नदी इन्दौर जिले में महू के पास जानापाव शिखर से प्रवाहित होकर मालवा पठार तथा गंगा के मैदान को पार कर 965कि.मी. (600मील) दूर यमुना में जाती है जिसके पानी को रोक कर बांध बना दिया गया है जो कि 5कि.मी. गहरा है।

मैंने गाँधीसागर के इस पहले शैलाश्रय का प्रलेखन(documentation) बांई से दांई तरफ व ऊपर से नीचे की तरफ किया है। इस शैलाश्रय में मध्याश्म कालीन (early mesolithic, middle mesolithic, late mesolithic) चित्र बने है जो कि शैलाश्रय की दीवार तथा छत पर चार समूह(clusters) में चित्रित है।

गाँधीसागर

शैलाश्रयः 1

आकारः लम्बाई–27.45m, गहराई–5.50m ऊँचाई–5.50m

Facing: दक्षिण–पश्चिम (SW)

कुल चित्रः 50–100 अध्यारोपित का कई परत होने तथा धुंधले होने के कारण यहां सभी चित्र दिखाई नहीं देते। गाँधीसागर के इस शैलाश्रय में 100 से अधिक चित्र बने हैं। किन्तु इस शैलाश्रय की एक ही सतह को अनेक बार प्रयोग किये जाने तथा समय के साथ धुंधले होने के कारण चित्रों को पहचानना बहुत मुश्किल है। इनमें से कुछ चित्र ही हैं जो स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। जिनमें 18 पशु आकृति(1हाथी, 1हिरन, 1गाय), 10 मानवाकृति आकृति, 2 डिज़ाइन, 2 क्रियाकलाप आदि चित्र स्पष्ट दिखाई देते है। जिनके आधार पर मैंने इस शैलाश्रय के चित्रों का प्रलेखन भी किया है।

इस शैलाश्रय में मध्याश्म कालीन (early mesolithic, middle mesolithic, late mesolithic) चित्र बने है जो कि शैलाश्रय की दीवार तथा छत पर चित्रित है।

शैलाश्रयः 2

आकारः लम्बाई–m, गहराई–m ऊँचाई–m

Facing: दक्षिण–पश्चिम (SW)

कुल चित्रः 2–4

चिब्बड़नाला

शैलाश्रयः 1

आकारः लम्बाई–154m, गहराई–24m ऊँचाई–

Facing: दक्षिण–पूर्व 200(SE)

कुल चित्रः 30 से अधिक चित्र

यहाँ अधिकांशतः मध्याश्म काल के बहुत बड़े आकार के चित्र, पशुपालन युगीन चित्र तथा ताम्राश्म काल के समूह चित्र चित्रित मिलते हैं। इस शैलाश्रय के अधिकतम चित्र शैलाश्रय की छत पर चित्रित होने के कारण अधिकतम चित्र सुरक्षित है। जिनमें पशु आकृति, मानवाकृति आकृति, डिज़ाइन, क्रियाकलाप आदि चित्रित है। यह शैलाश्रय भी मालवा के पठार पर स्थित है वर्षा के समय में वर्षा का जल इस नाले से होकर गुज़रता है। इस शैलाश्रय को मोडी माता के मन्दिर के नाम से भी जानते हैं।

शैलाश्रयः 2

आकारः लम्बाई–28m, गहराई–13m ऊँचाई–9.5m

Facing: दक्षिण–पूर्व 200(ES)

कुल चित्रः 40–45

 ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.1098393

यहाँ सभी चित्र मध्याश्म काल के मिलते हैं। इस शैलाश्रय के सभी चित्र शैलाश्रय की छत पर चित्रित होने के कारण अधिकतम चित्र सुरक्षित है। जिनमें पशु आकृति, मानवाकृति आकृति, डिज़ाइन, क्रियाकलाप आदि चित्रित है। यह शैलाश्रय भी मालवा के पठार पर स्थित है वर्षा के समय में वर्षा का जल इस नाले से होकर गुज़रता है। यहाँ अधिकतम चित्रों में गाय तथा हाथियों के समूह को बनाया है। इस शैलाश्रय का सबसे आकर्शक चित्र मानव तथा चीते के बीच होता संघर्ष है।

मोडी

रॉकः 1

शैलाश्रयः 1

आकारः लम्बाई–14m, गहराई–9.45m ऊँचाई–6.70m

Facing दक्षिण–पूर्व 200(SE)

कुल चित्रः 50–60

मोडी के सभी शैलाश्रय साल के अधिकतम माह में वर्षा के जल से भरा रहता है। जिस कारण हर मौसम में यहाँ के चित्रों का अध्ययन करना सम्भव नहीं है। यह शैलाश्रय आकार में बहुत छोटा है जो कि झाड़ियों से पूरी तरह ढ़का हुआ है। यहाँ अधिकतम चित्र मध्याश्म काल के मिलते हैं। कुछ ही चित्र हैं जो पशुपालन कालीन हैं। इस शैलाश्रय के सभी चित्र शैलाश्रय की दीवार पर चित्रित है। जिनमें 90 प्रतिशत चित्र शैलाश्रय की बाईं तरफ की दीवार पर चित्रित हैं। विषय वस्तु की बात की जाये तो यहाँ पशु आकृति, मानवाकृति आकृति, डिज़ाइन, क्रियाकलाप आदि चित्रित है। यहाँ अधिकतम पशुओं के समूह को बनाया है।

रॉकः 2

आकारः लम्बाई–21.65m, चौंड़ाई–12.80m ऊँचाई–5.80m

Facing: उत्तर–दक्षिण 340(NS)

शैलाश्रयः 1

आकारः लम्बाई–5.50m, गहराई–3.5m ऊँचाई–2.45m

Facing: दक्षिण 80(E)

कुल चित्रः 5–10

शैलाश्रयः 2

आकारः लम्बाई–4.7m, गहराई–3.65m ऊँचाई–1.83m

Facing: दक्षिण 80(E)

कुल चित्रः 30–35

रॉकः 3

आकारः लम्बाई–11.27m, गहराई–9.75m ऊँचाई–5.80m

शैलाश्रयः 1

आकारः लम्बाई–7.95m, गहराई–1.83m ऊँचाई–3.5m

Facing: दक्षिण 34(NW)

कुल चित्रः 61–70

40% शैल्टर चित्रित है।

शैलाश्रयः 2

आकारः लम्बाई–20m, गहराई–7m ऊँचाई–12m

Facing: दक्षिण 220(NE)

कुल चित्रः 14

रॉकः 4

आकारः लम्बाई–36m, चौंड़ाई–45m ऊँचाई–5.80m

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.1098393

शैलाश्रयः 1
आकारः लम्बाई–12, गहराई–1.83m ऊँचाई–3.5m
Facing: दक्षिण 4(S)
कुल चित्रः 19–25
35% शैल्टर चित्रित है।
शैलाश्रयः 3
आकारः लम्बाई–12 m, गहराई–1.5m ऊँचाई–10m
Facing: दक्षिण 140(SE)
कुल चित्रः 6–8
रॉकः 5
आकारः लम्बाई–10.6m, चौंड़ाई–7.92m ऊँचाई–4.54m
शैलाश्रयः 1
आकारः लम्बाई–7.5, गहराई–3.5m ऊँचाई–6m
Facing: दक्षिण–पूर्व 140(SW)
कुल चित्रः 85–90
शैलाश्रयः 2
आकारः लम्बाई–4m, गहराई–2m ऊँचाई–6m
Facing: दक्षिण–पूर्व 140(SW)
कुल चित्रः 3–5

भानपुरा क्षेत्र के प्रमुख शैलचित्र –

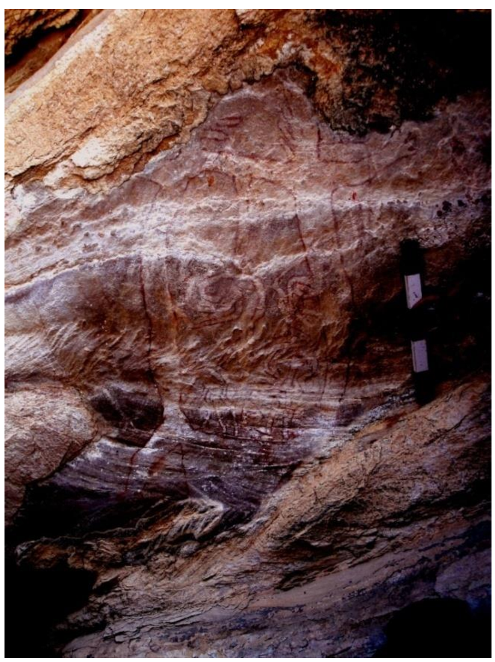

चित्र 7. विशाल मगर शल्य क्रिया युक्त गाँधी सागर, मध्याश्मीय *Dissected big reptile, more than 160 cm long. Gandhisagar. Mesolithic.*

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.1098393

चित्रः लम्बी गर्दनवाला पशु (abstract form), ताम्राश्म कालीन, मोडी

चित्र 4. शेर के आक्रमण का सामना करते धनुर्धर, चिब्बड़नाला, मध्याश्मीय *A hunter shooting an arrow on the head of a tiger who has caught hold of his fellow hunter's hand, a good example of the fellow spirit. Mesolithic. Chibbad nala.*

 ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.1098393

चित्र 9. शैलाश्रय, मोडी *Rock shelters in big quartzite boulders at Modi in Bhanpura region, Chambal valley.*

चित्रः विशाल आकार की डिज़ाइन, मध्याश्म कालीन मोडी

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.1098393

चित्र विशाल शैलाश्रय, चिब्बड़नाला *Big Rock shelter, Chibbad nala.*

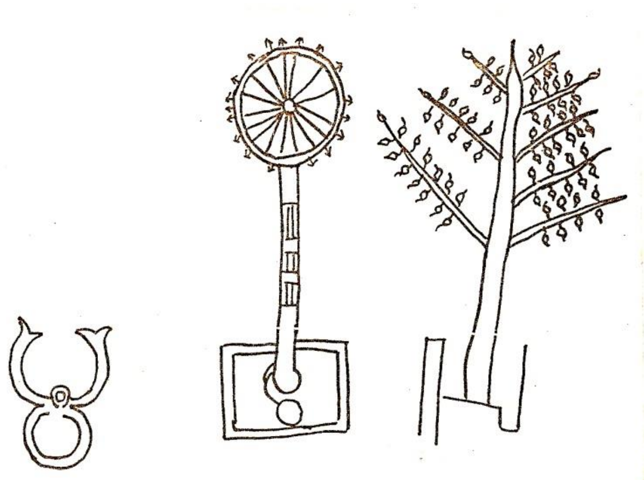

चित्र 11. बौद्ध चिन्ह, चिब्बड़नाला, ऐतिहासिक युग *Buddhist symbols in red colour.*

Chibbad nala, Chambal basin. Early Historic. After E. Neumayer.

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.1098393

चित्र 5. विशाल वन वृषभ, चिब्बड़नाला, मध्याश्मीय *A big bison in red outline in Chormata rock shelter at Chibbad nala in Chambal valley. Early Mesolithic or Upper Palaeolithic. Courtesy Yann P. Montelle.*

भानपुरा क्षेत्र के शैलचित्रों की विशेषताऐं–

यहाँ कलाकार ने समूह चित्र को बड़े ही सुंदरता तथा तरीका बद्ध तरीके से बनाया है।

कलाकार ने बड़े समूहों वाले चित्रों को भी व्यवस्थित तरीके से चित्रित करने का पूर्ण प्रयास किया है।

कलाकार ने चित्रण के लिये चित्र संयोजन तथा प्रमाण का पूर्ण ध्यान दिया है।

यहाँ कुछ चित्रों में कलाकार ने पर्सपेक्टिव का पूरा ध्यान दिया है।

तूलिका के माध्यम से तथा हाथ की अंगुली से फ्री हैंड ड्राइंग भी किया है।

यहां कुछ चित्रों में कलाकार ने सुंदरता पर ध्यान न देकर विषय वस्तु पर ध्यान अधिक बल दिया है।

उस समय के कलाकार अल्प समय में भी चित्र को बड़े रूप में बनाने में सक्षम थे।

यहॉँ कलाकार ने रेखा का प्रयोग बहुत ही सुंदर तरीके से व्यवस्थित तरीके से किया है।

मानव आकृति को उसके प्राकृतिक तथा abstract रूप में भी बनाया है।

मानव शरीर को भी अनुपात में भी बनाया है।

कलाकार ने विषय वस्तु में पेड़ों की सजावट के दृश्य भी बनाये है।

कलाकार ने पर्वों को सामुहिक उत्सवों को भी चित्रए में प्रस्तुत किया है।

यहाँ कुछ चित्रों में पशु आकृति को गर्भावस्था में भी बनाया है।

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.1098393

एक चित्र में कलाकार ने एक्सरे तकनीक में मगर के चित्र को बनाया है। इय प्रकार यह अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि उस समय का कलाकार भी कला के प्रति कितना समर्पित था।

मानव के शारीरिक के अंगों को दर्शाने के लिए लयात्मक रेखा का प्रयोग बहुत ही सुंदर ढंग से किया है।

मोडी के विशाल आकार की डिज़ाइन (intrecated desigen) में समांतर रेखा का प्रयोग बहुत ही अच्छे अव्यवस्थित ढंग से किया है जिसको बनाना आसान नहीं चित्र को देखकर पता चलता है कलाकार को गणित का भी ज्ञान था क्योंकि इस डिजाइन को बनाने के लिए स्केल का प्रयोग किया गया है तथा समान दूरी का भी ध्यान रखा गया है। यहां शैलचित्रों में अध्यारोपण किया है। अध्यारोपण (Superimposition) से तात्पर्य पुरा मानव ने चित्र बनाने के लिये एक ही केनवास को बार–बार प्रयोग में लाया अर्थाथ एक निश्चित स्थान पर एक बार चित्र बनाने के बाद पुनः उसी स्थान पर पहले वाले चित्र के ऊपर ही दूसरे चित्र बनाया है। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि शैलाश्रय परिसरों में कुछ विशेष शैलाश्रयों का या उनके किसी भाग का महत्वपूर्ण स्थान होता था जैसे हम हमारे घरों में एक ही स्थान को पूजाघर के रूप में प्रयोग करते हैं, दीवाली पर पूजन भी सदैव एक ही जगह पर किया जाता है। उसी प्रकार पुराकलाकारों ने भी किसी शैलाश्रयों को या उसके किसी एक भाग को चित्र बनाने के लिए हजारों वर्षों तक बार–बार प्रयोग किया, इसलिए हमें एक के ऊपर एक चित्र देखने को मिलते हैं। इस पूरी प्रक्रिया को अध्यारोपण (Superimposition) कहते हैं।

शैलचित्रों का महत्व

शैलचित्र स्थल प्रकृति की गोद में स्थित हैं, जिनमें से हमारे आदि पूर्वजों ने अधिकांश को अश्म युग के प्रारम्भ में खोजा। इनमें से कुछ श्रैलाशयों का प्रयोग तब से लेकर आज तक निरन्तर होता रहा है, कुछ को धार्मिक स्थलों के रूप में रूपान्तिरित कर दिया गया है जो आज भी भारतीयों के लिए श्रद्धा का केन्द्र हैं, जैसे भीमबेटका में शैलाश्रय में बना दुर्गा मन्दिर, भानपुरा के पठार में चिब्बड़ नाला में स्थित चोर माता मन्दिर, आदि। इस प्रकार चित्रित शैलाश्रयों से हमारे श्रद्धापूर्ण सम्बन्धों की परम्परा हजारों वर्षों से आज तक निरन्तर चली आ रही है। मानव प्रकृति के साथ जुड़ता है तो स्वंय को विशाल महसूस करता है और परम आनन्द की अनुभूति करता है।

शैलचित्रों का संरक्षण

शैलचित्रों के संरक्षण हम सबका उत्तरदायित्व है। हम इन्हें आने वाली पीढ़ियों को उनके प्राकृतिक रूप में हस्तान्तरित कर सकें। इसके लिए हमें निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना होगा :

(1) प्राकृतिक परिवेश को संरक्षित करें व इनसे छेड़–छाड़ ना करें। आस–पास के वृक्षों को ना काटें।

(2) शैलाश्रयों में पानी के रिसाव अथवा बहाव को रोकें।

(3) शैलचित्र धरोहर के प्रति हम गौरवान्वित महसूस करें एवं इस भाव को जनसामान्य में अधिक से अधिक प्रसारित करें।

इस प्रकार इन शैलचित्रों के अध्ययन से पता चलता है कि पुरा मानव उस समय कला दक्ष में कितना निपुड़ था उसने अपने भावों को कला के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। अतः आज की कला भी पुरा मानव की देन है। चित्र कला का विकास यहीं से प्रारंभ हुआ जिसका विकसित रूप आज की कला में देखा जा सकता है। शैलचित्र हमारे पुरा मानव की देन तथा हमारी धरोहर है। इयलिये हमारा कर्तव्य बनता है। कि वर्तमान में बचे शैलचित्रों को हम सुरक्षित रखे साथ ही हमें तथा सरकार को इन्हें संरक्षण प्रदान करने के लिये प्रोत्साहित करें।

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.1098393

References

[1] BEDNARIK, R.G. 2007.*Rok art science: The scientific study of palaeoart.* New Delhi: Aryan books international.
[2] BHAN, P.G. 1998. *Prehistoric art*. U.K:Cambridge university press.
[3] CHATURVEDI,R. 2002. *Dramatic elements in modern art.* Jaipur:Publication scheme.
[4] GUPTA, J. 1967. *PragaitihasikBhartiyaChitrakala* (Hindi). New Delhi: National Publishing House.
[5] KUMAR, G. 1983. *Archaeology of north-western Malwa: Prehistory and Protohistory*. Unpublished Ph.D. Thesis.Ujjain:Vikram University.
[6] KUMAR, G. 1992. Rock art of upper Chambal valley, Part-II: Some observations. *Purakala*3(1-2).
[7] KUMAR, G. 2000-01. Chronology of Indian rock art: A fresh attempt.*Purakala* 11-12.
[8] KUMAR, G. 2007.Documentation and preliminary study of the rock art of Chaturbhujnath nala.*Purakala* 17.
[9] KUMAR, G. 2012. Beginning of cattle domestication in India with special reference to Chambal valley: Perspectives of rock art and archaeology. *Purakala* 22.
[10] KUMAR, G. 2013. Parameters for artistic appreciation of rock art.*Purakala* 23.
[11] KUMAR, G. and A. PRADHAN. 2008. Study of rock art of Chaturbhujnath nala. *Purakala* 18: 23-52.
[12] LORBLANHET, M. 2001. *Rock art in the old world.* New Delhi:Aryanbooks international.
[13] MANI, B.R. and TRIPATHI, A. 2008. *Expression in Indian art vol I*.Delhi:Agamkala prakashan.
[14] MANI, B.R. and TRIPATHI, A. 2008. *Expression in Indian art vol II*.Delhi:Agamkala Prakashan.
[15] NEUMAYER, E. 1983.*Prehistoric Indian rock paintings*, Delhi:Oxford University Press.
[16] NIRDIP. 1991. Elements of contemporary art in rock art. *Purakala* 2(2).
[17] PANCHOLI,R.K.1978. *Bhanpurakshetrakepragaitihasikchitritshailashrya*. Unpublished M.A. Dissertation.Ujjain:Vikram University.
[18] PANDEY, S.K. 1993. *Indian rock art.*New Delhi: Aryan books international.
[19] PRADHAN, S. 2001. *Rock art in Orissa.* New Delhi: Aryan books international.
[20] WAKANKAR, V.S. 1978. *The dawn of Indian Art,* Ujjain: Bharti Kala Bhawan.

Journals

[21] *Purakala*, the Journal of Rock Art Society of India
[22] *Rock Art Research*, the Journal of Australian Research Association
[23] *International News Letter on Rock Art*. The Journal of Comite International d' Art Rupestre, Foix, France.
[24] *Kala*, the journal of Indian Art History Congress.
[25] Oxford Art Journal
[26] Art Journal (founded in 1978), the journal of Association of Art Histroians
[27] Journal of Art Historiography, University of Glasgov.

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.1098393

Website

[28] http://mpuntold.blogspot.in.
[29] http://en.wikipedia.org/wiki/Bhanpura.
[30] http://www.triposo.com.
[31] http://in.geoview.info/rock_shelter_art.
[32] http://beyondlust.wordpress.com.
[33] http://bradshawfoundation.com

*Corresponding author.
E-mail address: divya.singh0011@ gmail.com